समावेशी शिक्षा के लिए समावेशी भाषा
समसामयिक परिप्रेक्ष्य

नरेश कुमार*

समावेशी शिक्षा ने विविधता का उत्सव मनाने और सभी विद्यार्थियों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुँच को सुनिश्चित करने के एक साधन के रूप में ध्यान आकर्षित किया है। वास्तव में, समावेशी शिक्षा के केंद्र में समावेशी भाषा निहित है, जो सम्मानजनक और सीखने हेतु अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देने के लिए एक बुनियाद के रूप में कार्य करती है। यह लेख समावेशी शिक्षा की अवधारणा एवं शैक्षिक वातावरण निर्माण में भाषा की शक्ति को स्पष्ट करता है। जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी की विशिष्ट पहचान और अनुभवों को पहचानने तथा अपनाने वाली समावेशी संस्कृतियों के शैक्षिक मॉडल पर चर्चा की गई है। साथ ही यह लेख विविधता का सम्मान करने एवं सशक्तीकरण को बढ़ावा देने के संदर्भ में समावेशी शिक्षा के लिए समावेशी भाषा की आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालता है। इसके अतिरिक्त, यह लेख समसामयिक परिप्रेक्ष्य में 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' 'बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022' और 'विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023' के आलोक में समावेशी भाषा पर व्यापक प्रकाश डालते हुए, बच्चों को वास्तविक दुनिया से जोड़ने के अवसरों पर चर्चा करता है। यह लेख विद्यार्थियों को तैयार करने और सामाजिक न्याय के लिए समावेशी भाषा की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

शिक्षा के परिदृश्य में जहाँ विविधता न केवल प्रचलित है, अपितु अपनाई भी जाती है, के संदर्भ में समावेशी शिक्षा की अवधारणा ने महत्वपूर्ण लोकप्रियता प्राप्त की है। समावेशी शिक्षा एक शैक्षणिक दृष्टिकोण है, जो शिक्षार्थियों की विविधता को स्वीकार करता है और यह सुनिश्चित करता है कि सभी विद्यार्थियों को उनकी पृष्ठभूमि, क्षमताओं या पहचान को महत्व दिए बिना गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुँच प्राप्त हो। समावेशी शिक्षा अपने मूल रूप में सीखने के लिए ऐसे परिवेश का निर्माण करना चाहती है, जो प्रत्येक विद्यार्थी के विकास के लिए स्वागत योग्य, सहायक और अनुकूल हो। यद्यपि, समावेशी शिक्षा के संदर्भ में संरचनात्मक और निर्देशात्मक पहलुओं पर बहुत अधिक बल दिया जाता है। इस परिप्रेक्ष्य में एक मौलिक किंतु प्रायः अनदेखा किया जाने वाला तत्व समावेशी भाषा है। समावेशी भाषा उस आधारशिला के रूप में कार्य करती है, जिस पर समावेशी शिक्षा खड़ी होती है। इसमें ऐसे शब्दों, वाक्यांशों तथा संचार विधियों का उपयोग सम्मिलित है, जो शिक्षार्थियों की विविध पहचान और अनुभवों के प्रति सम्मानजनक, पुष्टिकारक और संवेदनशील है।

* *असिस्टेंट प्रोफेसर*, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, वरुण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली 110024

संक्षेप में, समावेशी भाषा समानता, सामाजिक न्याय एवं एक ऐसा वातावरण निर्मित करने के लिए प्रतिबद्ध है, जहाँ सभी व्यक्ति अथवा विद्यार्थी मूल्यवान, सम्मानित एवं सशक्त अनुभव करते हैं।

समावेशी शिक्षा को समझना

समावेशी भाषा की भूमिका पर विचार करने से पहले समावेशी शिक्षा को समझना अनिवार्य है। समावेशी शिक्षा; शिक्षा के पारंपरिक मॉडल से भिन्न है, जो विद्यार्थियों को उनकी अलग-अलग पृष्ठभूमि या पहचान तथा क्षमताओं में कथित अंतर को महत्व देती है। इसके विपरीत समावेशी शिक्षा प्रत्येक विद्यार्थी की व्यक्तिगत भिन्नता के बावजूद उसकी पूर्ण भागीदारी और सफलता की अनुशंसा करती है। अपने मूल रूप में समावेशी शिक्षा समानता, विविधता और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों द्वारा निर्दिष्ट होती है।

समावेशी शिक्षा यह मानती है कि विविधता प्रकृति एवं मानवीय जीवन के अनुभव का एक अंतर्निहित पहलू है, जिसमें नस्ल, जातीयता, संस्कृति, भाषा, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, जेंडर, यौन अभिविन्यास, दिव्यांगता आदि के अंतर सम्मिलित हैं। समावेशी शिक्षा विविधता को सीखने-सिखाने और शैक्षिक समुदाय की शक्ति एवं संवर्धन के स्रोत के रूप में देखती है। समावेशी शिक्षा केवल भौतिक स्थानों या शैक्षणिक संसाधनों तक ही सीमित नहीं है, अपितु इसमें समावेशी संस्कृतियाँ और प्रथाएँ भी सम्मिलित हैं, जो सभी के लिए अपनापन, सम्मान तथा शैक्षणिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देती हैं। यह प्रत्येक विद्यार्थी की अद्वितीय आवश्यकताओं, शक्तियों व आकांक्षाओं को स्वीकार करती है।

शैक्षिक वातावरण को आकार देने में भाषा की शक्ति

भाषा शैक्षिक वातावरण के भीतर धारणाओं, दृष्टिकोण और बातचीत को आकार देने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य करती है। हम जिन शब्दों (मौखिक और लिखित) का उपयोग करते हैं, उनमें या तो बहिष्करण प्रथाओं को सुदृढ़ करने या समावेशिता और अपनेपन को बढ़ावा देने की क्षमता होती है। इस संदर्भ में समावेशी भाषा एक शैक्षिक वातावरण निर्मित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो सीखने के लिए अनुकूल तथा न्यायसंगत हो। वास्तव में, समावेशी भाषा विविधता, सम्मान और सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्धता की प्रतीक है। इस भाषा के अंतर्गत सचेत रूप से ऐसे शब्दों और अभिव्यक्तियों का चयन करना सम्मिलित है, जो शैक्षिक समुदाय के भीतर विद्यार्थियों, शिक्षकों और हितधारकों की विविध पहचान एवं अनुभवों के बारे में जागरूकता दर्शाते हैं। इस प्रकार समावेशी भाषा के माध्यम से शिक्षक सभी विद्यार्थियों के लिए अपनेपन और स्वीकार्यता की भावना उत्पन्न कर सकते हैं, जिससे समावेशी शिक्षा के लिए एक आधार तैयार किया जा सकता है।

समावेशी शिक्षा के लिए समावेशी भाषा की आवश्यकता एवं महत्व

समावेशी शिक्षा के लिए समावेशी भाषा की आवश्यकता एवं महत्व को इस प्रकार स्पष्ट किया गया है—

अपनेपन की भावना को बढ़ावा देना

समावेशी भाषा शैक्षिक समुदाय के भीतर सभी विद्यार्थियों के लिए अपनेपन और स्वीकार्यता की भावना उत्पन्न करने में सहायता करती है, चाहे उनकी पृष्ठभूमि, योग्यता एवं पहचान कुछ भी हो। जब विद्यार्थी स्वयं को मूल्यवान और सहयोगी अनुभव करते हैं तो उनके सीखने में सक्रिय रूप से संलग्न होने तथा सकारात्मक कक्षा वातावरण निर्माण में योगदान करने की संभावना बढ़ जाती है।

सकारात्मक संबंध बनाना

समावेशी भाषा विद्यार्थियों, शिक्षकों और शैक्षिक समुदाय के अन्य सदस्यों के बीच सकारात्मक संबंधों को बढ़ावा देती है। सम्मानजनक और पुष्टिकारी भाषा का उपयोग करके शिक्षक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में एक ऐसा वातावरण बना सकते हैं, जहाँ विश्वास, सहानुभूति और आपसी सम्मान की भावना तथा सहयोग एवं संचार बढ़े।

विविधता का समर्थन करना

समावेशी भाषा सभी विद्यार्थियों की विशिष्ट पहचान, अनुभव और दृष्टिकोण को स्वीकार करते हुए उनकी विविधता का सम्मान करती है। यह शिक्षकों को कक्षा में भाषायी और सांस्कृतिक विविधता को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है, जिससे विद्यार्थियों को एक-दूसरे से सीखने और दुनिया के बारे में उनकी समझ को व्यापक एवं विकसित करने के अवसर मिलते हैं।

सीखने के प्रतिफलों को बढ़ाना

समावेशी भाषा एक ऐसा वातावरण बनाकर सीखने के प्रतिफलों को बढ़ाती है जहाँ विद्यार्थी आत्माभिव्यक्ति के लिए सुरक्षित, समर्थित और सशक्त अनुभव करते हैं। जब विद्यार्थी स्वयं को सम्मानित और मूल्यवान अनुभव करते हैं तो उनकी कक्षीय चर्चाओं में सक्रिय रूप से भाग लेने, प्रश्न पूछने व शैक्षणिक क्रियाकलापों में भाग लेने की अधिक संभावना होती है, जिससे सीखने के प्रतिफलों में सुधार होता है।

अंतर्निहित पूर्वाग्रह को संबोधित करना

समावेशी भाषा, भाषागत रूढ़िवादिता या सामाजिक असमानताओं को दूर करने के लिए विभिन्न विधियों के बारे में जागरूकता उत्पन्न करके अंतर्निहित पूर्वाग्रहों के प्रति सचेत करती है। अपने भाषा विकल्पों की जाँच करके और सक्रिय रूप से पूर्वाग्रहों को चुनौती देने का प्रयास करके शिक्षक अधिक समावेशी शिक्षण वातावरण बना सकते हैं।

आलोचनात्मक चिंतन को बढ़ावा देना

समावेशी भाषा विद्यार्थियों को सामाजिक धारणाओं पर प्रश्न उठाने, रूढ़ियों को चुनौती देने और कई दृष्टिकोणों पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करती है एवं उनके आलोचनात्मक चिंतन को बढ़ावा देती है। शिक्षक विद्यार्थियों को विविध मुद्दों और अनुभवों से अवगत कराकर जटिल सामाजिक मुद्दों की गहरी समझ विकसित करने में सहयोग दे सकते हैं और उनमें सहानुभूति एवं करुणा की भावना का विकास कर सकते हैं।

सुरक्षित वातावरण एवं स्थान का निर्माण करना

समावेशी भाषा विद्यार्थियों के लिए एक ऐसे सुरक्षित वातावरण एवं स्थान का निर्माण करती है जहाँ विद्यार्थी उचित एवं स्वतंत्र निर्णय लेने अथवा भेदभाव से मुक्त अपने अनुभव साझा करने में सहजता अनुभव करते हैं। जब विद्यार्थी विद्यालयी

वातावरण में सुरक्षित और समर्थित महसूस करते हैं तो उनके बौद्धिक रूप से जोखिम लेने, नए विचारों की खोज करने और सीखने की प्रक्रिया में पूरी तरह से संलग्न होने की संभावना बढ़ जाती है।

विद्यार्थियों को वास्तविक संसार के लिए तैयार करना

समावेशी भाषा विद्यार्थियों को जटिल सामाजिक एवं व्यावसायिक वातावरण में संचालित करने के लिए आवश्यक संचार कौशल और सांस्कृतिक क्षमता विकसित करती है, जिससे वे विविधतापूर्ण एवं परस्पर अंतर्संबंधित विश्व में सफलता के लिए तैयार हो सकें। शिक्षक समावेशी भाषा का मॉडल तैयार करके और विविधता के प्रति सम्मान को बढ़ावा देकर विद्यार्थियों को प्रभावी सहयोग एवं नेतृत्व के लिए आवश्यक पारस्परिक कौशल विकसित करने में सहायता करते हैं।

सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना

समावेशी भाषा भेदभाव को चुनौती देने तथा सभी व्यक्तियों के अधिकारों और सम्मान के लिए सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने का एक माध्यम है। कक्षा में समावेशिता और समानता को सक्रिय रूप से बढ़ावा देकर शिक्षक सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में योगदान देता है, जो न्यायसंगत समाज का निर्माण करने में सहायक होगा।

शिक्षा में समावेशी भाषा के व्यावहारिक निहितार्थ

समावेशी भाषा को अपनाने से शैक्षिक पारिस्थितिकी तंत्र में शिक्षकों, प्रशासकों और अन्य हितधारकों के लिए कई व्यावहारिक निहितार्थ हैं —

पाठ्यक्रम और निर्देश

समावेशी भाषा पाठ्यक्रम सामग्री और शिक्षणशास्त्र के विकास में सहयोग कर सकती है, जो विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि, अनुभव और सीखने की शैलियों की विविधता को दर्शाती है। शिक्षक अपनी शिक्षण पद्धतियों में विविध दृष्टिकोणों, शब्दावलियों और सांस्कृतिक संदर्भों को सम्मिलित कर सकते हैं, जिससे सभी विद्यार्थियों के लिए सीखना अधिक प्रासंगिक और आकर्षक हो जाएगा।

कक्षा का वातावरण

समावेशी भाषा एक सकारात्मक और समावेशी कक्षीय वातावरण के लिए सकारात्मक आधार तैयार करती है, जहाँ सम्मान, सहानुभूति और समझ को महत्व दिया जाता है। शिक्षक सम्मानजनक संचार और व्यवहार के लिए स्पष्ट अपेक्षाएँ स्थापित करने के लिए समावेशी भाषा का उपयोग कर सकते हैं, एक सुरक्षित वातावरण एवं स्थान बना सकते हैं, जहाँ विद्यार्थी स्वयं को अभिव्यक्त करने तथा अपने साथियों के साथ संवाद करने में सहजता अनुभव करें।

पारस्परिक बातचीत

समावेशी भाषा विद्यार्थियों, शिक्षकों और शैक्षिक समुदाय के अन्य सदस्यों के बीच पारस्परिक बातचीत का मार्गदर्शन करती है, जहाँ एक ओर यह सक्रिय श्रवण, सहानुभूति और उदार मानसिकता को प्रोत्साहित करती है तो वहीं दूसरी ओर यह विविध पृष्ठभूमि एवं अनुभवों में सार्थक संबंधों को बढ़ावा देती है।

नीति और निर्णय-निर्माण

समावेशी भाषा शैक्षणिक संस्थानों के भीतर नीति विकास और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को प्रभावित

कर सकती है। प्रशासक समाज के लिए नीतियों, दिशानिर्देशों और संचार में समावेशी भाषा को प्राथमिकता देकर एक सकारात्मक उदाहरण स्थापित करते हुए समानता और समावेशन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित कर सकते हैं।

व्यावसायिक विकास

शिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास पहल में समावेशी भाषा को एकीकृत करके उन्हें समावेशी शिक्षण वातावरण बनाने के लिए ज्ञान और कौशल के साथ सशक्त बनाया जा सकता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम विविधता, समानता तथा समावेशन के मुद्दों पर चिंतन, संवाद एवं कौशल निर्माण के अवसर प्रदान कर सकते हैं जिसके परिणामस्वरूप शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को प्रभावी ढंग से संबोधित करने में सक्षम बनाया जा सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में समावेशी भाषा

भारत की *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* भाषा के क्षेत्र में समावेशी शिक्षा पर विशेष बल देती है। यह भारत की भाषायी विविधता को स्वीकार करती है और इसका उद्देश्य सभी विद्यार्थियों के लिए शिक्षा को सुलभ बनाना है, जिसमें विभिन्न भाषायी पृष्ठभूमि के विद्यार्थी भी सम्मिलित हैं। समावेशी भाषा को *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में एकीकृत एवं सम्मिलित करने की अनुशंसा की गई है। इससे संबंधित कुछ प्रमुख प्रावधान और उदाहरण इस प्रकार हैं—

बहुभाषावाद और मातृभाषा में शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कम-से-कम कक्षा 5 तक और अधिमानतः कक्षा 8 और उससे आगे तक शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा या स्थानीय भाषा के उपयोग की अनुशंसा करती है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों के लिए सीखना अधिक सुलभ और प्रासंगिक बनाना है। उदाहरणस्वरूप, तमिलनाडु में एक विद्यार्थी को तमिल में शिक्षा मिलेगी, जबकि पश्चिम बंगाल में एक विद्यार्थी को बंगाली में पढ़ाया जाएगा, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि बच्चे विषय-वस्तु को बेहतर ढंग से समझ सकें और अपनी सांस्कृतिक विरासत से अधिक जुड़ाव महसूस करें।

त्रि-भाषा सूत्र

यह नीति त्रि-भाषा सूत्र को सशक्त करती है तथा पाठ्यक्रम में कम-से-कम दो मूल भाषाओं को सम्मिलित करने को प्रोत्साहित करती है। इसका उद्देश्य बहुभाषावाद को बढ़ावा देना और भाषायी विविधता के प्रति सम्मान को बढ़ावा देना है। उदाहरणस्वरूप कर्नाटक में एक विद्यार्थी कन्नड़ (क्षेत्रीय भाषा), हिंदी (एक अन्य भारतीय भाषा) और अंग्रेजी सीख सकता है जिससे कई भाषाओं में दक्षता सुनिश्चित होती है।

लचीला पाठ्यक्रम और शिक्षणशास्त्र

यह शिक्षा नीति एक लचीले पाठ्यक्रम पर बल देती है जिसे विद्यार्थियों की भाषायी आवश्यकताओं के अनुकूल बनाया जा सकता है। इसमें विभिन्न भाषाओं में पाठ्यपुस्तकें और शिक्षण सामग्री विकसित करना सम्मिलित है। उदाहरणस्वरूप, विभिन्न भाषायी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मराठी, तेलुगु और असमिया जैसी विभिन्न भाषाओं में पाठ्यपुस्तकें और डिजिटल शिक्षण संसाधन उपलब्ध होना।

बहुभाषी शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग

राष्ट्रीय शिक्षा नीति कई भाषाओं में शैक्षिक सामग्री विकसित करने और वितरित करने के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग की अनुशंसा करती है। इसमें डिजिटल प्लेटफॉर्म, ई-बुक और शैक्षिक ऐप का उपयोग सम्मिलित है। उदाहरणस्वरूप, हिंदी, गुजराती, पंजाबी और अन्य भाषाओं में सामग्री उपलब्ध कराने वाले ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म शिक्षा को अधिक समावेशी और सुलभ बनाते हैं।

शिक्षक प्रशिक्षण और पेशेवर विकास

यह नीति शिक्षकों को बहुभाषी कक्षाओं में पढ़ाने और अपने विद्यार्थियों की भाषायी विविधता को समझने में सक्षम बनाने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता पर बल देती है। उदाहरणस्वरूप, शिक्षकों के लिए पेशेवर विकास पाठ्यक्रम विकसित किए जाएँ जो शिक्षकों को दक्ष बनाएँ कि कैसे द्विभाषी या बहुभाषी सेटिंग में विद्यार्थियों को प्रभावी रूप से पढ़ाया जाए और विभिन्न भाषाओं में शिक्षण के लिए संसाधनों का निर्माण किया जाए।

क्षेत्रीय एवं जनजातीय भाषाओं को बढ़ावा देना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा में क्षेत्रीय एवं जनजातीय भाषाओं के संरक्षण और उपयोग को बढ़ावा देती है। यह इन भाषाओं में शिक्षण सामग्री के विकास और उनमें कुशल शिक्षकों की भर्ती को प्रोत्साहित करती है। उदाहरणस्वरूप, आदिवासी समुदायों के बच्चे अपनी मूल भाषा में सीख सकें, यह सुनिश्चित करने के लिए संथाली, गोंडी या भीली जैसी आदिवासी भाषाओं में प्राइमर विकसित किए गए हैं।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा विकसित प्राइमर्स से उपयुक्त उदाहरण

द्विभाषी प्राइमर्स

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) ने बुनियादी शिक्षा के लिए द्विभाषी प्राइमर विकसित किए हैं, जिनमें क्षेत्रीय और अंग्रेजी भाषा दोनों में सामग्री दी गई है। इससे विद्यार्थियों को अपनी मातृभाषा में दक्षता बनाए रखते हुए धीरे-धीरे अंग्रेजी में सीखने में सहायता मिलती है। उदाहरणस्वरूप, कर्नाटक में शुरुआती कक्षाओं के लिए, प्राइमर में अंग्रेजी अनुवाद या पूरक अंग्रेजी सामग्री के साथ कन्नड़ में कहानियाँ और पाठ सम्मिलित हो सकते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य भारत की भाषायी विविधता को ध्यान में रखकर शिक्षा को अधिक समावेशी बनाना है। इसलिए बहुभाषिकता को बढ़ावा देने के लिए शिक्षण के माध्यम के रूप में मातृभाषा का उपयोग करना तथा लचीले प्रौद्योगिकी-संचालित समाधान विकसित कर यह सुनिश्चित करने का प्रयास करना कि प्रत्येक बच्चे (चाहे उसकी भाषायी पृष्ठभूमि कुछ भी हो) तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुँच सुनिश्चित हो।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित *बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022* तथा 'विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023' में शिक्षण के माध्यम के रूप में मातृभाषा या स्थानीय भाषा, बहुभाषी एक्सपोजर, बहुभाषी शिक्षण-अधिगम सामग्री व संसाधन, बहुभाषी शिक्षण-अधिगम हेतु शिक्षकों का पेशेवर

विकास, सीखने के लिए भाषा का त्रि-भाषा सूत्र, स्थानीय संस्कृति और संदर्भ का समावेशन करते हुए अभिभावकों एवं समुदाय की सहभागिता, क्षेत्रीय एवं जनजातीय भाषाओं को बढ़ावा देने जैसे कई महत्वपूर्ण आयामों को क्या, क्यों एवं कैसे विद्यालयी शिक्षा में क्रियान्वित करना है, का सरल एवं उदाहरणों के साथ उल्लेख किया गया है।

रा.शै.अ.प्र.प. प्राइमर से उपयुक्त उदाहरण

रा.शै.अ.प्र.प. ने कई भाषाओं में ऐसे द्विभाषी और बहुभाषी प्राइमर विकसित किए हैं, जिनसे यह सुनिश्चित होता है कि बच्चे अपनी मातृभाषा में सीख सकें। साथ ही, उन्हें धीरे-धीरे अन्य भाषाओं से भी परिचित कराया जा सके। उदाहरण के लिए, असम में उपयोग किए जाने वाले प्राइमर में असमिया को प्राथमिक भाषा के रूप में सम्मिलित किया गया है, जिसमें प्रमुख शब्द और अवधारणाएँ अंग्रेजी और हिंदी में भी प्रस्तुत की गई हैं, ये अतिरिक्त भाषाओं के समावेशन में सहायता करती हैं।

समावेशी भाषा — ध्यान रखने योग्य बिंदु

समावेशी भाषा का उपयोग करते समय प्रभावी संप्रेषण सुनिश्चित करने और समावेशिता को बढ़ावा देने के लिए कई प्रमुख बिंदुओं को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है। ये बिंदु निम्न प्रकार हैं —

विविधता का सम्मान

अध्यापक अपने विद्यार्थियों की विविध पहचान, पृष्ठभूमि और अनुभवों को स्वीकार करें और उनका सम्मान करें। विद्यार्थियों की जाति, जेंडर, धर्म, क्षमता या किसी अन्य विशेषता के आधार पर उनके बारे में मिथ्या धारणा बनाने से बचें।

रूढ़िवादिता और पूर्वाग्रहों से बचना

अध्यापक ऐसी भाषा का उपयोग करने से बचें जो रूढ़िवादिता को सशक्त करती हो या कुछ समूहों के विरुद्ध पूर्वाग्रहों को बढ़ावा देती हो। समावेशी, सम्मानजनक और भेदभावपूर्ण निहितार्थों से मुक्त भाषा का उपयोग करके रूढ़िवादिता और पूर्वाग्रहों को चुनौती दें।

जेंडर समावेशी भाषा का उपयोग

अध्यापक विद्यार्थियों को उनकी जेंडर पहचान के आधार पर संबोधित करने या हाशिए पर रखने से बचने के लिए जेंडर समावेशी भाषा का उपयोग सुनिश्चित करें। किसी जेंडर विशेष की बजाय समावेशी सर्वनाम (जैसे — 'वे') या जेंडर-तटस्थ शब्दों का उपयोग करें।

भाषा के प्रति सचेत रहें

अध्यापक ऐसी भाषा का प्रयोग करने से बचें जो विद्यार्थी विशेष या दिव्यांग विद्यार्थियों को निराश अथवा उनकी उपेक्षा करती हो या फिर उनके साथ भेदभाव करती हो। साथ ही, विद्यार्थियों को भी असामाजिक तथा असंवैधानिक भाषा का उपयोग करने से सचेत करें। भाषा अनुप्रयोग के संदर्भ में ऐसे शब्दों और वाक्यांशों का चयन करें, जो सम्मानजनक हो।

पसंदीदा शब्दावली का सम्मान करें

अध्यापक व्यक्तियों अथवा विद्यार्थियों की पसंदीदा शब्दावली और पहचान का सम्मान करें। उस भाषा का उपयोग करें जिसका उपयोग लोग स्वयं का वर्णन करने के लिए करते हैं तथा विभिन्न शब्दों और अभिव्यक्तियों के बारे में सीखने के लिए तैयार रहें, जो शिक्षक व विद्यार्थियों के लिए अपरिचित हो सकते हैं।

सुनें और सीखें

अध्यापक एवं विद्यार्थी प्रतिक्रिया के लिए तैयार रहें और एक-दूसरे से सीखने के लिए इच्छुक रहें। हाशिए पर रहने वाले समूहों के दृष्टिकोण और अनुभवों को सुनें और उस ज्ञान का उपयोग अपनी भाषा विकल्पों एवं संचार प्रथाओं को सूचित करने के लिए करें।

स्वयं को समावेशी शिक्षा के लिए शिक्षित करें

विविधता, समानता और समावेशन के मुद्दों के बारे में शिक्षा व विद्यार्थी स्वयं को शिक्षित करने की पहल करें। समावेशी भाषा उपयोग करने में वर्तमान शब्दावली, नवाचारों और विकसित मानदंडों के बारे में सूचित एवं अवगत रहें।

उपरोक्त बिंदुओं को ध्यान में रखकर शिक्षक अपनी भाषा और संचार प्रथाओं के माध्यम से अधिक समावेशी और सम्मानजनक वातावरण बनाने में योगदान दे सकते हैं।

निष्कर्ष

समावेशी शिक्षा के संदर्भ में समावेशी भाषा एक आधारशिला के रूप में कार्य करती है जो एक ऐसा वातावरण बनाने में मार्ग प्रदान करती है जहाँ विविधता का उत्सव मनाया जाता है और प्रत्येक विद्यार्थी को महत्व और सम्मान दिया जाता है। समावेशी भाषा शैक्षिक परिदृश्य को बदलने, आत्मीयता को विकसित करने के साथ-साथ समानता और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने की शक्ति रखती है। यह विद्यार्थियों में अपनेपन की भावना का विकास करती है, उनके शैक्षणिक निष्पादन को बढ़ाती है एवं सहानुभूति और समझ को बढ़ावा देती है तथा विविध दुनिया अर्थात विविधता से भरे संसार में सफलता के लिए विद्यार्थियों को तैयार करती है। समावेशी भाषा को स्वीकार कर शिक्षक समावेशी शिक्षा का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं, जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचने के लिए सशक्त महसूस करे तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए अधिक न्यायसंगत और समावेशी समाज का सृजन करने में योगदान दे सके।

संदर्भ

इंक्लूसिव लैंग्वेज गाइड https://www.apa.org/about/apa/equity-diversity-inclusion/language-guidelines से 07 मई 2024 को प्राप्त किया गया.

झा, मदन मोहन. 2010. *समावेशी शिक्षा — दृष्टिकोण और प्रक्रियाएँ*. प्रकाशन संस्थान, अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली.

डिसेबिलिटी-इन्क्लूसिव लैंग्वेज गाइडलाइन्स 10 मई 2024 को https://www.ungeneva.org/sites/default/files/2021-01/Disability-Inclusive-Language-Guidelines.pdf से प्राप्त किया.

मेहता, सुरेश सिंह और प्रिया तिक्खा. 2023. *समावेशी शिक्षा. विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के साथ अधिगम*. रुद्रा पब्लिकेशन, मुंबई.

यूनेस्को. इन्क्लूजन इन एजुकेशन — लीविंग नो लर्नर बिहाइंड. 27 मई 2024 को https://www.unesco.org/en/inclusion-education से प्राप्त किया गया.

यूनिसेफ. इन्क्लूसिव एजुकेशन इन्क्लुडिंग चिल्ड्रेन विद डिसएबिलिटीस इन क्वालिटी लर्निंग — व्हाट नीड्स टू बी डन? 3 मई 2024 को https://www.unicef.org/eca/sites/unicef.org.eca/files/IE_summary_accessible_220917_brief.pdf से प्राप्त किया गया.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2022. *बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.

———. 2023. *स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023*, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.

———. प्राइमर्स इन इंडियन लैंग्वेजेस. रा.शै.अ.प्र.प. 27 मई 2024 को http://ncert.nic.in/primers.php से प्राप्त किया गया.

———. इंडेक्स फॉर इंक्लूसिव स्कूल्स, रा.शै.अ.प्र.प. 10 मई 2024 को https://www.ncert.nic.in/degsn/pdf/NonPrint/Index_Inclusiveness.pdf से प्राप्त किया गया.

शर्मा, युक्ति. 2021. *इन्क्लूसिव एजुकेशन — पर्सपेक्टिव्स, प्रैक्टिस एंड पेडागॉजी*, पियर्सन एजुकेशन, जून, 2021

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

स्टूडेंट डाइवर्सिटी एंड इंक्लूसिव एजुकेशन को 09 मई 2024 https://mmc.ugc.ac.in/Home/Student_Diversity_and_Inclusive_Education से प्राप्त किया गया.

सिंह, रजनी रंजन और हेमंत नामदेव. 2021. *समावेशी शिक्षा दशा एवं दिशा*. कनिष्क पब्लिशर्स, दरियागंज, दिल्ली.

सिंह, विपिन कुमार और ज्योत्सना चौहान. 2021. *समावेशी शिक्षा*. अग्रवाल पब्लिकेशन, दिल्ली.